सृजन (हिंदी रचनात्मक लेखन समिति)
रिपोर्ट (जनवरी 2021-जून 2021)

संयोजक:डॉ . सुषमा सहरावत
छात्रा अध्यक्ष: नीरज रेक्सवाल

कमला नेहरू कॉलेज की हिंदी रचनात्मक लेखन समिति " *सृजन*" द्वारा आज **06 जनवरी 2021**को नव वर्ष की छात्राओं के लिए *"**नवागत अंतः महाविद्यालय संस्मरण लेखन एवं वाचन प्रतियोगिता***" का आयोजन किया गया।छात्राओं ने इस प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। छात्राओं का विषय चयन नवीन एवं प्रभावशाली था।प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल के रूप में डॉ. मनोज कुमार और डॉ. संतोष कुमार उपस्थित थे। इस प्रतियोगिता में प्रथम , द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के साथ ही तीन प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किए गए-

प्रथम पुरस्कार साधना (बी.ए राजनीतिक विज्ञान)
द्वितीय पुरस्कार नेहा मिश्रा (बी.कॉम प्रोग्राम)
तृतीय पुरस्कार रितिका गौर (बी.ए इतिहास विशेष)
पहला प्रोत्साहन पुरस्कार गुड़िया पांडे (बी.कॉम प्रोग्राम)
द्वितीय प्रोत्साहन पुरस्कार मान्या महाजन (बी.ए साइकॉलजी) (psychology)
तृतीय प्रोत्साहन पुरस्कार प्रेरिता पटवल (बी.ए प्रोग्राम प्रथम वर्ष)

प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों की रचनात्मकता प्रभावित करने वाली रही। विषय वैविध्य और प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण से युक्त आज की यह संस्मरण लेखन प्रतियोगिता यादगार अनुभव बन गई। कार्यक्रम में उपस्थित प्राध्यापकों , निर्णायक गण, छात्राओं एवं श्रोताओं का हार्दिक धन्यवाद जिनके सहयोग से ही यह कार्यक्रम सफल हो सका।

कमला नेहरु कॉलेज , दिल्ली विश्वविद्यालय की रचनात्मक लेखन समिति 'सृजन' द्वारा **09 एवं 10 अप्रैल 2021** को **दो दिवसीय 'अंतर्महाविद्यालय गद्य विधा रचनात्मक लेखन कार्यशाला'** का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ.

कार्यशाला का शुभारम्भ मंगलाचरण गायन के साथ हुआ. कार्यशाला के **प्रथम दिन** हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की **प्रोफेसर मंजु मुकुल** आमंत्रित थीं। उनका स्वागत करते हुए सृजन समिति की संयोजक डॉ. सुषमा सहरावत ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए उसकी रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रो. मंजु मुकुल के परिचय का पठन सृजन समिति की छात्रा सचिव तिलित्मा ने किया. प्रो. मंजु ने अपनी प्रस्तुति में **रेखाचित्र, यात्रा संस्मरण और लघु कथा लेखन** की बारीकियों एवं तकनीकी आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला. उन्होनें रचनाशीलता को एक सजग जीवन दृष्टि से जोड़ कर देखा और कल्पनाशीलता के महत्व को

रेखांकित किया. लेखक की सतत मानसिक तैयारी एवं निरीक्षण क्षमता को उन्होंने महान रचनाकारों के जीवंत प्रसंगों से स्पष्ट किया. लघुकथा की मारकता को उन्होंने प्रभावशाली उदाहरण देकर प्रस्तुत किया. साथ ही निर्मल वर्मा, अज्ञेय, महादेवी की रचनाओं से उदाहरण देकर उन्होंने यात्रा संस्मरण तथा रेखाचित्र विधाओं की रचनात्मक बारीकियों को समझाया. प्रो. मंजु मुकुल की प्रस्तुति उत्साहपूर्ण, जीवन्त और ऊर्जा से भरपूर थी. कार्यक्रम का संचालन सृजन समिति की छात्रा उपाध्यक्ष साक्षी झा ने किया.कार्यशाला के उपरांत विद्यार्थियों के लिए एक प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी जिसमें अनेक प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की. 'सृजन' समिति के सदस्य डॉ. मनोज कुमार ने प्रो. मंजु मुकुल का धन्यवाद ज्ञापन किया.

कार्यशाला के **दूसरे दिन** मानविकी कला संकाय , इग्नू के प्रोफेसर एवं **वरिष्ठ आलोचक जितेन्द्र श्रीवास्तव** आमंत्रित थे. सृजन समिति की संयोजक डॉ. सुषमा सहरावत ने प्रो. श्रीवास्तव का स्वागत करते हुए कार्यशाला के दूसरे दिन की रूपरेखा को स्पष्ट किया. प्रो. श्रीवास्तव का परिचय पाठ सृजन समिति की छात्रा उपाध्यक्ष साक्षी झा ने किया. प्रो. श्रीवास्तव ने अपनी प्रस्तुतु में रचनाशीलता को नदी के प्रवाह की तरह निरंतरता से पूर्ण बताया. प्रो. श्रीवास्तव ने **डायरी लेखन , व्यंग्य रचना और रिपोर्ताज** विधाओं की रचनात्मकता पर प्रकाश डाला. उन्होंने मोहन राकेश की डायरी के हवाले से डायरी लेखन की बारीकियां समझाई. व्यंग्य लेखन का जिक्र करते हुए प्रो. श्रीवास्तव ने हास्य और व्यंग्य में अंतर स्पष्ट करते हुए फूहड़ हास्य को व्यंग्य समझ लेने की गलती से आगाह किया. उन्होंने हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, ज्ञान चतुर्वेदी की रचनाओं से उदहारण देते हुए व्यंग्य हेतु विडम्बना बोध को पकड़ने वाली दृष्टि को विकसित करने पर बल दिया. प्रो. श्रीवास्तव की प्रस्तुति सरस, जीवंत और आत्मीयता से पूर्ण थी और एक धारदार संवाद की तरह थी. दूसरे दिन की कार्यशाला का सञ्चालन सृजन समिति की छात्रा सचिव तिलित्मा ने किया. सृजन' समिति के सदस्य डॉ. मनोज कुमार ने प्रो. श्रीवास्तव का धन्यवाद ज्ञापन किया. कार्यशाला के उपरान्त दूसरे दिन भी विद्यार्थियों के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की गयी. कार्यशाला में 70 से अधिक प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया. दो दिवसीय कार्यशाला के समापन के अवसर पर सृजन समिति के शिक्षक सदस्यों -डॉ. मनोज कुमार, डॉ. कुमारी अनीता तथा डॉ. नीरू कुमारी के अतिरिक्त छात्रा सदस्यों- गायत्री, साक्षी और तिलित्मा ने अपने विचार साझा किये. अंत में संयोजक डॉ. सुषमा सहरावत ने प्राचार्य महोदया डॉ. कल्पना भाकुनी, आमंत्रित रचनाकारों,छात्र-छात्राओं, प्रतिभागियों एवं समिति सदस्यों का विधिवत धन्यवाद् एवं आभार ज्ञापन किया.